Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के आधुनिक काव्य में सामाजिक मूल्यों पर चिन्तन

श्रीमती राजश्री जोशी*

* शोध छात्र, संस्कृत अध्ययनशाला, सुमन मानविकी भवन, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना – विश्वभर की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत का सर्वप्रथम और उच्च स्थान है। भारतीय संस्कृति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना हो तो संस्कृत का अध्ययन आवश्यक है। अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं की यह जननी है। आज भी भारत की समस्त भाषाएँ इसी वात्सलमयी जननी के स्तन्यामृत से पुष्ट हो रही है। भारतीय भाषाओं को जोड़नेवाली कड़ी कोई है तो वह संस्कृत ही है।

भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, सामाजिक और राजनैतिक जीवन एवं विकास के सोपानों की सम्पूर्ण व्याख्या संस्कृत वाङमय के माध्यम से आज उपलब्ध है। सदियों से इस भाषा और इसके वाङमय को भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। सहस्त्राब्दियों तक समग्र भारत को सांस्कृतिक एवं भावनात्मक एकता में आबद्ध रखने का महत्वपूर्ण कार्य इस भाषा में किया हैं। इसी कारण भारतीय मनीषियों ने इस भाषा को अमर भाषा या देववाणी के नाम से सम्मानित किया है।[1]

भारतीय ज्ञान परम्परा और संस्कृति को समृद्धशाली बनाए रखने में इस भाषा का योगदान महनीय है। यह भाषा प्राचीन होने के साथ अर्वाचीन, प्रयोगशील एवं वैज्ञानिक भी है। संस्कृत भाषा की व्यापकता के कारण आज के परिप्रेक्ष्य में इसका महत्व अत्यधिक बढ़ गया है।

साहित्य सृजन में भी प्राचीन साहित्यकारों की तरह ही अर्वाचीन साहित्यकार अपनी लेखनी से समाज को विपुल साहित्य प्रदान कर रहें हैं। इन्हीं अर्वाचीन साहित्यकारों में इस शोध पत्र में अभिराज राजेन्द्र मिश्र के आधुनिक काव्य में सामाजिक मूल्यों पर चिंतन किया गया है।

भूमिका – संस्कृत भाषा और उसका साहित्य भारत देश की संस्कृति की पहचान है। आज भी रचनाकार संस्कृत साहित्य की सर्जना कर रहें हैं। वे प्राय: यह समझकर ही साहित्य रचना करने में प्रवृत्त होते हैं कि, भारत देश की आत्मा भवितव्यता जिस तरह संस्कृत भाषा के माध्यम से व्यक्त हो सकी है उस तरह अन्य किसी भाषा के माध्यम से नहीं।

उन्नीसवीं सदी और बीसवीं सदी के पूर्वार्ध के साहित्य की एक प्रमुख प्रवृत्ति राष्ट्रीयता रही है। उस समय जो राष्ट्रीय भावधारा संस्कृत रचनाओं में प्रवाहित हुई वह संस्कृत साहित्य की पूरी परम्परा में ही नया मोड़ है। आजादी की लड़ाई का शंखनाद और क्रान्ति का तेजस्वी स्वर भाषा और अभिव्यक्ति की प्रखरता तथा उसी काव्योत्कर्ष के साथ उसमें गूंजा है।

स्वातंत्र्योत्तर भी संस्कृत रचनाकारों ने प्रातिभ नवोन्मेष व प्रज्ञा की प्रत्यग्रता के साथ भारत की भवितव्यता और अपने समय के यथार्थ की अवगति प्रस्तुत की है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् व्यक्ति के जीवन में अनेक परिवर्तन हुए इसका प्रभाव समाज व सामान्यजन पर पड़ा ऐसे समय के साहित्य इन प्रभावों से भला कैसे अछूता रहता। उस समय के साहित्यकारों ने तत्कालीन परिस्थितियों को भोगा, समझा और उसे लेखनी के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान की। परतन्त्र भारत के बाद स्वतंत्र भारत की परिस्थितियां भिन्नता लिये हुये थी इसलिये तो साहित्य को भिन्न युगीन परिस्थितियों की देन कहा गया है।

तत्कालीन परिस्थितियों में समाज में व्याप्त कुरीतियां, रूढियां, सामाजिक मूल्यों का ह्रास, दुराचरण, कदाचरण, पाखण्ड व दिखावा चारों और फैला हुआ था। साहित्यकारों ने अपनी कलम रूपी तूलिका को इस ओर मोड़ने का प्रयत्न किया, इस बीच राष्ट्रबोध, राष्ट्रप्रेम व राष्ट्र चेतना की व्याप्ति व्यापक स्तर पर पहुंच गयी थी जिसका प्रभाव भी साहित्य में देखने को मिला।

इसी कड़ी में स्वातंत्र्योत्तर कवि अभिराज राजेन्द्र मिश्रजी ने समसामयिक घटनाओं और गहन संवेदनाओं को समावेशित करके अनुभव व यथार्थ का संगम अपनी कविताओं में स्थापित किया।

शोध आलेख – स्वतन्त्रता के पश्चात् समाज में सतत् व शीघ्रता से परिवेश में बदलाव दृष्टिगोचर हुये। साहित्य समाज का दर्पण होता है इसी तारतम्य में साहित्य पर भी इस बदलते परिवेश का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। मूल्यों के परिवर्तन से जिस नवयुग का प्रारम्भ हुआ उसमें संस्कृत साहित्य ने भी अपनी पुरातन परम्पराओं को तोड़ते हुये अपने नवीन प्रतिमान स्थापित किये। आधुनिक संस्कृत काव्य ने पारम्परिक एवं पुरातन चिंतन से ऊपर उठकर सोचना प्रारम्भ किया और उसे सर्वग्राही बनाने का प्रयत्न किया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में विचार करते हैं तो पाते हैं कि हम पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता से ओतप्रोत हैं और सम्पूर्ण विश्व को केन्द्र में रखकर ही कवियों ने लेखनी चलाने का महनीय कार्य किया है। आधुनिक काव्य में विषय बदल गये हैं जो सामाजिक मूल्यों के ही करण है। साहित्य में अंतरंग व बाह्य दोनों ओर से परिवर्तन परिलक्षित होते है।

अभिराज राजेन्द्र मिश्र के व्यक्तित्व एवं कृतित्व में उनकी स्पष्टवादिता व बेबाक छवि के दर्शन होते हैं। वे अपने साहित्य में बहुत कड़वी बात कहने से भी नहीं झिझकते। चूंकि मिश्रजी प्रयोगशील साहित्यकार है। अत: उन्होंने मर्यादा व मूल्यों के संघर्षो के मध्य स्वयं को स्थापित किया। और हृदयग्राही

साहित्य की रचना की उनकी आधुनिक कविता में ऐसे कुछ विषय जिनको परिवर्तन की दृष्टि से चिन्तन करना आवश्यक मान सकते है।

कवि मिश्रजी को कभी व्यक्तियों की स्तुतिपरक रचनाएँ लिखना पसन्द नहीं था चाटुकारिता चापलूसी से ओतप्रोत रचनाएँ इन्होंने कभी नहीं लिखी। तत्कालीन परिस्थितियों में सामाजिक विकृतियों को इन्होंने बहुत निकट से जानकर अपने काव्य में स्थान दिया। उनकी कविता का प्रमुख विषय या आत्मा कुटियों में रहने वाले खेतिहर मजदूर में बसती है वे इसे ही तो राष्ट्रीय चेतना कहते हैं।

प्राणतन्त्रीस्फुरत्काकलीकौतुकै:
पामराणां कुटीरे स्थित मन्मन:
शालभञ्जिका 72

स्वतंत्रता के पश्चात् देश में सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन हुये कवियों को भी देश में हो रहे परिवर्तन से अत्यन्त प्रसन्नता हो रही थी परंतु जिस प्रकार से लोगों का खासकर धनाढ्य लोगों व नेताओं का दोहरा चरित्र सामने आ रहा था वह आत्म चिन्तन के लिये प्रेरित करने वाला तथा मूल्यांकन करने जैसा था।

उनके काव्य में नेताओं का दोहरा चरित्र बहुत ही सुंदर ढंग से उजागर हुआ है। उन्होंने भ्रष्टाचार पर भी कुटील प्रहार किये हैं।

किं मां कथाभिधातैर्जर्जरदेहं ताडयसि रक्षिन्
मद्दत्तषि धनश्रीर्भविता त्वदुरितधनायै।
(आर्यान्योक्तिशतकम् 2018)
अग्निं सन्दीप्य नेतार: स्वयं तिष्ठन्ति दूरत:
ज्वलन्ति केवलं मुग्धा अनाथं जायते कुलम्।
अभिराजसहस्त्रकम् 50

राजेन्द्र मिश्र स्वयं के भारतीय होने पर गर्व करते थे – देश स्वतंत्र हो चुका था फिर भी राजेन्द्रजी के हृदय में भारत माँ के प्रति देशभक्ति का संचार सतत् होता रहता था वे स्वप्न में भी यह मांगते थे कि यदि मेरा जन्म सौ बार भी हो तो इस पवित्र भारतीय भूमि में ही हो और मैं मिट्टी पर लोटकर जीवन को सार्थक कर लूं। इसके पीछे निश्चित ही परतंत्रता के समय का दु:ख होगा । भारत भूमि व माटी से प्रेम भी उन नेताओं को कटाक्ष ही है जो स्वतंत्रता के तुरंत बाद ही परतंत्रता के संघर्षो को भूल गये।

विराजन्तामनन्ता: शालयो नतमञ्जरी पुञ्जा
सुशोभन्तां वनान्ता दुष्प्रवेशल: सन्निचुल कुञ्जा
भवेदिह मृत्तिकायां विलुण्ठनं भूयोऽपि शतवारम् परंस्याद् भारते।
मधुपर्णी 43

इन काव्यों के माध्यम से कवि की समाज के प्रति संवेदनशीलता व्यक्त हुयी है । चूंकि इस समय कविता देश ही नहीं अपितु राष्ट्र की सामाजिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय परिस्थितियों के प्रमाण प्रस्तुत करती है अत: अर्वाचीन साहित्यकारों की लेखनी से पारम्परिक विषयों के साथ नव विषयों का सामंजस्य दृष्टिगोचर हुआ है। राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में भी स्वतंत्रता के पूर्व देश की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष का तो स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्रीय दुर्गति पर अभिराज राजेन्द्र मिश्रजी ने दु:ख भी व्यक्त किया है। हम स्वतंत्रता के साथ ही स्वच्छंद भी हो गये जिससे नैतिक मूल्यों का हनन हुआ जो मिश्रजी के साहित्य में दिखाई दिया। इन्होंने इस पर चिंता व्यक्त की और ऐसा साहित्य सृजन हो जो हमारी स्वतंत्रता को संवर्धित करने वाला हो यह मंतव्य भी प्रकट किया ।

मातृभूमि के पश्चात् राजेन्द्र मिश्रजी सर्वाधिक चिंतित थे तो संस्कृत को लेकर वे कहते थे जो संस्कृत भाषा हमारी धरोहर है, पहचान है, जिसने समाज को पुष्कल साहित्य दिया है वहीं आज याचना करती हुयी दिखाई दे रही है, स्वयं के अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही है। देवभाषा संस्कृत की उपेक्षा पर भी राजेन्द्रमिश्र जी के हृदय पटल पर असंख्य प्रश्न निर्माण हुये जो उन्होंने अपने साहित्य कृतियों में पूछे हैं।

क्वास्ति पाण्डितीविकासो देवभाषया विना ?
क्वास्ति संस्कृति प्रकाशो देवभाषया विना ?
मधुपर्णी 76

वे इसके माध्यम से पूछ रहे हैं क्या संस्कृत के बिना संस्कृति का विकास होगा ?

अभिराज राजेन्द्र मिश्र राष्ट्र कवि थे फिर भी इनकी आत्मा गांव में बसती है जब वे अपने काव्य में ग्रामीण परिदृश्य तूलिका के माध्यम से उकेरते हैं तब गांव की दादी नानी अपनी अभिव्यक्तियों में व्यक्त होती जाती है।

शनैरूच्यतां कर्णिनी भित्तिरेषा
वका वैरिणोऽत्र प्रणिधयश्च कीरा
शालभञ्जिका 20

अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने नारी विषयक चिंतन में कहा है कि कितनी ही परिपाटी बदल जावे नारी अबला ही रहेगी और यदि वह विरोध करने का प्रयास भी करेगी तो उसका विरोध कोई नहीं सुनेगा उसकी आवाज को बहुत ही सहजता व आसानी से दबा दिया जायेगा। नारी की योग्यता कितनी ही हो पुरूष प्रधान समाज सदैव नारी पर हावी ही रहेगा। वे इसका विरोध करते हैं और सीता, शंकुतला, वसंतसेना जैनी नारियों को अपने काव्य में प्रकट करते हैं।

वराकी नारी दुर्व्यवतिष्ठते
रामं रघुनन्दनमियेष वैदेही
ताञ्च रति लम्पटो रावण:
द्धारिकाधीशमियेष रूक्मिणी
ताञ्च निर्गणश्शिशुपाल:
हस्त सनातनीयं परिपाटी
दुर्नियते: पुरन्ध्रीणाम्
मधुपर्णी 106

परंतु वर्तमान में केवल सीता, सावित्री, द्रौपदी जैसे पारम्परिक, ऐतिहासिक एवं मर्यादित नारी चरित्र ही काव्य में परिलक्षित न होकर नारी के परिवर्तित रूप भी दिखाई देते हैं। समय की आवश्यकता ने नारी को बदलने के लिये मजबूर किया है उसने अपने पारम्परिक रूप को त्याग कर वेशभूषा से लेकर व्यवहार व कार्य तथा कलापों में भी बदलाव किया हैं। अभिराज राजेन्द्र मिश्र प्राचीन व अर्वाचीन दोनों संस्कृतियों के पक्षधर हैं वे मानते हैं कि सकारात्मक रूप से तो नारी में हुआ यह बदल अच्छा है परंतु नारी ने स्वतंत्रता को स्वच्छंदता के साथ विकृत रूप दे दिया है जिससे मर्यादायें छुट रही हैं। व नैतिक मूल्य भी हनन की ओर हैं –

महिला मुक्त्यान्दोलनैस्त्वया
गृहबद्ध नार्यो विमोचिता:
पतय: पचन्ति किष महानसे
पत्न्यश्च समाजोद्धाररता

धात्रीपालयति शिशुं भवने
पितृपरिचयरहितं नमोनम:
मधुपर्णी 56

अभिराज राजेन्द्र मिश्र जैसे संवेदनशील कवि जो एक ओर समज में व्याप्त कुरीतियों व रूढ़ियों को लेकर काव्य सृजन करते हैं तो दूसरी ओर नेताओं के दोहरे चरित्र पर विचार करते हैं वहीं वे इस बात को लेकर चिंतित है कि देश स्वतंत्र होकर भ्रष्टाचार की पराकाष्ठा पर पहुंच रहा है तो गांव की संस्कृति एवं मजदूरों को लेकर उनकी संवदेनशीलता चरम पर पहुंचती है तभी वे प्रेम और श्रृंगार के काव्य का सृजन कर अपनी बहुमुखी प्रतिभा को भी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हैं वे अपने पवित्र प्रेम की अभिव्यक्ति भी नि:संकोच करते हैं।

नहि जगदतिरूचिरं त्वया विना
जीवतमपि न चिरं त्वया विना
तव नयनभङ्गलीला ललितम्
दृश्यतेऽखिलं वलितं वलितम्
गायनमपि बधिरं त्वया विना
तव पाणिसशेसह संश्चृष्टम्
वपुरिदं भति सुधपाऽऽविष्टम
यौवनमपि विधुरं त्वया विना
मृद्धीका 12

यह प्रेमगीत ईश्वर से एकाकार होने को प्रेरित करता है कितना सुंदर काव्य है जो नर नारी का एवं दूसरे के बिना अस्तित्व को ही स्वीकार नहीं करता। इस काव्य के पश्चात् अभिराज राजेन्द्र मिश्र समाज में हो रहे परिवर्तन व चेतना के साथ सहृदय कवि होने का प्रमाण देते हैं साथ ही यह बता रहे हैं कि समाज की समस्या को देखते देखते उसके अंदर का प्रेमकवि भी अभी जीवित है। वह संवेदनहीन नहीं है और शिव शक्ति का एकाकार रूप स्वीकार करते हैं।

जैसा कि अभिराज राजेन्द्र मिश्र के बारे में कहा जाता है कि वे स्तुति काव्य के सख्त विरोधी थे परंतु उनके प्रकीर्णखण्ड में विभिन्न प्रकार की स्तुतियां हैं वैसे इन्हें स्तुतियां न कहकर शुभकामनाएँ कह सकते है। कवि राजेन्द्रजी ने जो श्लोकबद्ध शुभकामनाएँ अपने मित्रों को भेजी थी उन्ही का संकलन यह ग्रन्थ है। उन्होंने कस्मैदेवाय ग्रन्थ में इंदिरा गाँधी व महात्मा गांधी के जीवन की व्यथा एवं कथा को प्रस्तुत किया है। –

गतवति दिवि नाथे विद्धुरीणे फिरोजे
कथमपि छवि शोकं भूरिवेगं नियम्य
पुनरपि पितृशोकं वैरिणां दुर्विरोधं
प्रियतनयवियोगं भालयन्ती स्थितासि
कस्मैदेवाय – 213

अभिराज राजेन्द्र मिश्र ने किस प्रकार ताकतवर हमेशा छोटे एवं कमजोर प्रणी को अपना शिकार बनाता है का उल्लेख अपने काव्य में किया है उनका कटाक्ष समाज में व्याप्त धनाढ्य व अभिजात्य वर्ग के द्वारा पीडित एवं शोषित के शोषण की ओर है। वे छोटी मछली को बड़ी मछली कैसे अपना शिकार बनाती है को उदाहरण के रूप में लेते है – तत्कालीन परिस्थिति में यह बड़ा परिवर्तन समाज में दिखाई दिया जब देश स्वतंत्र तो हो गया परंतु शोषण का क्रम बदस्तूर जारी था।

हेयस्वार्थपूर्त्यै भ्रातृणां हत्या
पोषामश्चटका: शलभान् हत्वा
ऋतुपर्णा 57

इसी प्रकार नेताओं की प्रत्येक प्रकार की जालसाजी द्वेष, धूर्तता पर वे गुस्सा है उनका रोष

उद्याने यस्मिन् सान्द्रतरौ
प्रतिशाखमुलूका वल्गन्ते
कल्याणं तस्य कथं भक्ति।
सुषमा क्व वसन्त स्यागमने
मधुपर्णी 27

ऐसे व्यक्त हुआ है उनके मत में समाज को बर्बाद करने के लिये एक ही उल्लू पर्याप्त है और यदि हर पेड़ पर ही उल्लू बैठा हो तो क्या परिणाम होंगे। काव्य संरचना के लिये जब कवि का आंतरिक हृदय शब्दों को रचता है आकार देता है तब उससे निकलने वाली सकारात्मक या नकारात्मक उर्जा सर्जन करती है उससे अनुभूति का निर्माण होता है। दु:खी, पीडित, शोषित रचनाकार, साहित्यकार की पीड़ा व्यथा उसके साहित्य में सहज रूप से मुखरित होती है।

समाज में पसरने वाली नकारात्मक व निषोधात्मक भावनाएँ जब काव्य में अपना स्थान पा रही है तो वे अपने अलग संस्करण के साथ पाठकों को दी जा रही है। इन काव्यों में न केवल साहित्यकार का रोष होता है अपितु समाज की कुण्ठाएँ भी व्याप्त होती है।

समाज में फैली विषमताओं ने हमारी सांस्कृतिक नींव को जर्जर व कमजोर कर दिया था ऐसे में राजेन्द्र मिश्रजी ने ऐसा काव्य सृजन किया जिससे निषेधात्मक अभिव्यक्तियां सकारात्मक में बदल गयी।

राजेन्द्र मिश्रजी ने आध्यात्मिक दृष्टिकोण के साथ निषेधात्मक अभिव्यक्तियों में स्वयं को प्रकट किया है। वे स्वयं को मरघट की पीड़ा से जोड़ते हैं जो समान्यजन की नजरों में घृणा का स्थान है।

मृतघट्टहोऽहं
जीवितां जनानां घृणास्पदं
प्रेतातां वंशी वाटोऽहम्
मृतघट्टहोऽहं
मधुपर्णी 92

राजेन्द्र मिश्रजी ने अपने रूपरूद्रीपम् में नवनियुक्त अध्यापिकाओं के अधकचरे ज्ञान तथा उनके अन्य सद्गुणों पर भी व्यंग्य किया है, उन्होंने खालिस्तान, दस्यु समस्या, मिलों को लूटना, चोरी डकैती जैसे विषयों को भी सम्मिलित किया जो उस समय समाज की तात्कालीन समस्याएँ थी। उनका उद्देश्य गिरते नैतिक मूल्यों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करना था। बहुमुखी प्रतिभा के धनी राजेन्द्र मिश्रजी ने साहित्य की समस्त विधाओं में अपनी कलम चलायी है उनके द्वारा संस्कृत हिन्दी साहित्य जगत को जो विकल साहित्य दिया गया वह अतुलनीय है। अर्वाचीन साहित्य सृजन में जो उनका योगदान है वह अविस्मरणीय होने के साथ प्रेरणादायक भी है। साथ ही आपके द्वारा सृजित साहित्य शोधार्थियों के लिये अमूल्य निधि है तथा मार्ग प्रशस्त करने वाली संजीवनी के समान है।

राजेन्द्र मिश्र प्रगल्भ साहित्य समाज की विभिन्न परिस्थितियों व समस्याओं पर केन्द्रित है अर्थात् कवि राजेन्द्र मिश्र अत्यन्त संवेदनशील साहित्यकार है। वो अपनी तटस्थता के लिए भी जाने जाते है अत: उनके साहित्य में निस्पक्षता व पारदर्शिता के दर्शन होते हैं जो उनके विलक्षण

गुणों के द्योतक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:-

1. आधुनिक संस्कृत काव्य की परम्परा – मंजुलता शर्मा
2. ऋतुपर्णा – अभिराज राजेन्द्र मिश्र
3. मधुपर्णी – अभिराज राजेन्द्र मिश्र
4. मृद्धीका – अभिराज राजेन्द्र मिश्र
5. कस्मै देवाय – अभिराज राजेन्द्र मिश्र
6. शालभञ्जिजका – अभिराज राजेन्द्र मिश्र
7. आर्यान्योक्तिशतकम् – अभिराज राजेन्द्र मिश्र
8. अभिराज सहशस्त्रकम् – अभिराज राजेन्द्र मिश्र

Footnote:-

1. https://hi.m.wikipedia.org संस्कृत साहित्य विकिपीडिया

****